दिल के दौरे के विषय में डॉ० लूका क्या कहते है

आलोक 65 वर्ष का था। एक दिन जब वह कहीं जा रहा था, उसे छाती में भयंकर दर्द हुआ। उसने चलना बन्द कर दिया, दर्द समाप्त हो गया। उसने कुछ देर तक आराम किया। फिर ज बवह उठकर जाने लगा तो दर्द आने जाने लगा। जब वह अपने घर आया तो उसे दो सीढ़ियाँ चढ़नी थी, उसे मालूम था कि अब यह कठिन है। जैसे ही उसने चढ़ना शूरू किया उसे भयंकर दर्द हुआ। इस दर्द के साथ–साथ अब, पसीना एवं चक्कर भी जुड़ गये। एक मित्र जो ऊपर आ रहा था उसने उसकी ऊपर चढ़ने में सहायता की, और एम्बूलेंस को फोन कर दिया। वह उसे अस्पताल ले गया। टेस्ट करने पर पता चला कि उसे भयंकर दिल का दौरा पड़ा था। उस दिन वह मरा नहीं। हालाँकि डॉक्टरों ने परिवार के पास आकर उसके ईलाज के कई पक्षों पर विचार किया।

मित्रों, बहुत से लोगों को आलोक के समान अफ्रिका एवं विश्वभर में दौरे पड़ते है। कई लोग इससे भर भ जाते है। जितने लोग इससे बच जाते है उन्हें गंभीर समस्याएँ पैदा हो जाती है, तथा वह बाद में मर जाते है। क्या दिल के दौरे के मरीज़ का दौरा पड़ने के बाद ईलाज होता है? यदि हाँ तो यह कैसे होता है? उनकी कैसे मदद् की जा सकती है?

मित्रों, पहली बात दिल के दौरे का ईलाज करने में यह है कि इसे पड़ने से रोका जाएँ। हमने इसके विषय में पहले चर्चा की है। एक बार किसी को जब दिल का दौरा पड़ जाता है, सम्भावना यह है कि वो बहुत ही जल्दी मर जाता है दूसरे दौरे के कारण। यह रोकथाम ईलाज से बेहतर है। रोकथाम पर विचार करेंगे, क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह कैसे होता है? पहली बात, अच्छा खाना, खाकर, अपना वज़न कम रखें। प्रतिदिन, 20 मिनट तक व्यायाम करें, इसके बाद अपने रक्तचाप को जाँचें कह आपको उच्च रक्तचाप या मधूमेह तो नहीं है। अपने डॉक्टर से इसके विषय में बात करें। अन्त में यदि धूम्रपान करते है तो, इसे छोड़ दे। यह दिल के दौरे की रोकथाम का संक्षिप्त विवरण है।

मित्र दिल के दौरे का कैसे ईलाज करें? पहली बात, दिल का दौरा आरटरीज के बन्द होने से पड़ता है, यह आरटरीज ह्रदय को रक्त की पूर्ति करते है। अतः जब यह बन्द हो जाता

है? इसके दो मुख तरीके है। पहला, दवाई के द्वारा। दूसरा, सर्जरी के द्वारा। संभवतः और कोई चिकित्सा के क्षेत्र में इतना विकास नहीं हुआ जितना की दिल के दौरे के क्षेत्र में। अब दिल के दौरे के मरीज़ के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है, इतना 15 वर्ष पहले संभव नहीं था। कैसी दवाई उपयोग लाए? बहुत सारी दवाईयाँ है परन्तु बहुत सी नई दवाईयाँ हैं जिनके द्वारा उच्च रक्तचाप एवं कोलेस्ट्रोल का कम किया जा सकता है। यदि दिल फैल भी हो रहा है, या खून की पूर्ति नहीं कर रहा है, तो इसके लिए भी दवाईयाँ है जिनसे मदद हो सकती है। इसकी 5–8 प्रकार है, जिनसे दिल के दौरे क मरीज़ की सहायता कर सकते है।

इनमें एसप्रीन प्रमुख है। इसके द्वारा दिल के दौरे से बचा जा सकता है। वास्तव में जब किसी को दौरा पड़ता है तो हम उसे एसप्रीन देते हैं। एसप्रीन दिल का पहला दौरा पड़ने से रोक सकती, और यदि पहला पड़ चुका है तो दूसरा पड़ने से रोक सकती है। यदि 81 एम.जी प्रतिदिन उपयोग करें। यह स्त्री पुरूष दोनों के लिए है। यह कैसे काम करती है, इसके विषय में मालूम नहीं है। एक बार दौरा यदि पड़ गया तब 325 एम.जी. से सहायता मिलती है। छोटी सी एसप्रीन से पेट में अल्सर हो सकते सकते है, अतः इसे खाने के साथ ले। एसप्रीन को व्यक्ति कब और कैसे ले? 30 साल की उम्र से या 40 साल की शुरूआत में 81 एम.जी. लेनी शुरू करें। महिलाएँ 40 के बाद या 50 वर्ष के शुरू में शुरू कर सकती है, परन्तु यह उम्र अलग अलग क्यों?

महिलाओं को पुरूषों की तुलना में 10 वर्षों बाद दिल का दौरा पड़ना शुरू होता है। ऐसा क्यों होता है? ज्यादातर विशेषज्ञ मानते है कि इसका सम्बन्ध महिलाओं के मैनोपाज से हे। महिलाओं के शरीर में जो एस्ट्रोजन होता है उन्हें ह्रदय रोग एवं दिल के दौरे से बचाता है। यह एस्ट्रोजन महिलाओं को ऑवेरी में पैदा होता है मैनोपाज होने तक। इस एस्ट्रोजन के न होने से उन्हें मैनोपाज होता है। मैनोपाज के बाद स्त्रियों को दिल के दौरे पड़ सकते हैं। परन्तु 60 वर्ष की उम्र पहुँचते पहुँचते स्त्री एवं पुरूष दोनों को समान रूप से दौरे पड़ते है।

बाइबल मनुष्य के ह्रदय के विषय में बहुत कहती है। यह न केवल शारीरिक ह्रदय बल्कि आत्मिक ह्रदय के बारें में बताती है। क्या आपको मालूम है कि हम सब के पास ऐसा ह्रदय है। ह्रदय हमारी सोच एवं भावनाओं का केन्द्र है। 1000 ईसा पूर्व राजा दाऊद लिखते है, "मूर्ख ने अपने मन में कहा, परमेश्वर है ही नहीं, वे भ्रष्ट है और उन्होंने अधर्म के घृणित कार्य किए है, ऐसा कोई नहीं जो भलाई करता हो; परमेश्वर ने मनुष्य की सन्तान पर स्वर्ग से दृष्टि की है

कोई समझदार कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं, वे सब भटक गये है, वे सब भ्रष्ट हो गए है, कोई भी नहीं जो भलाई करता हो एक भी नहीं" (भजन संहिता 53:1–3)।

मित्रों, इसका मतलब क्या है? जो लोग मूर्ख है वे कहते है कि कोई परमेश्वर नहीं है। ये भ्रष्ट है इनमें से कोई भी अच्छा नहीं है। क्यों? इनके भ्रष्ट तरीके से कोई भी अच्छा नहीं हैं। क्यों? इनके भ्रष्ट तरीके उनके कार्यो को भ्रष्ट कर देता है। उदाहरण के तौर पर वे केवल अपना ही भला करते है। उनके काम करने का असली कारण है अपनी भलाई। ये स्वार्थ है, उनकी कोई भलाई नहीं है। परमेश्वर कहता है जो उसको नहीं मानते है, वे ऐसा करते है। क्या इसके लिए हम कुछ कर सकते हैं। इसके लिए दाऊद कहता है, "देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है; प्रभु मेरे प्राण के सम्भालनेवालों के संग है। वह मेरे द्रोहियों की बुराई को उन्हीं पर लौटा देगा; हे परमेश्वर, अपनी सच्चाई के कारण उन्हें विनाश कर। मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊँगा; हे यहोवा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा, क्योंकि यह उत्तम है। क्येाकि तू ने मुझे सब संकटों से छुड़ाया है, और मैं अपने शत्रुओं को विजय दृष्टि से देखा है" (भजन संहिता 54:4–7)।

परमेश्वर ने दाऊद को केवल संभाला ही नहीं बल्कि उसकी सारी समस्याओं से छुड़ाया भी। यह कितनी महान प्रतिज्ञा है। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने हमें सारी समस्याओं से बचाया। इस पृथ्वी पर वो यीशु के रूप में आया। यीशु स्वयं परमेश्वर था। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? क्योंकि उसने हमसे प्रेम किया। यूहन्ना की पुस्तक जो 90 ईसवीं में लिखी गई। वो यीशु के विषय में बहुत सी बातें बताता है। पहली बात, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था" (1 यूहन्ना 1:1)। इसका अर्थ है कि यीशु परमेश्वर था। यीशु का दूसरा नाम था, परमेश्वर का वचन। आगे यूहन्ना कहता है, "और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में निवास किया" (यूहन्ना 1:14)। यहाँ लिखा है कि वचन देहधारी हुआ, जिससे वो बता सकता है कि वो हमसे प्रेम करता है, हमारी कमजोरियों में हमारे साथ रहता है। इससे पता चलता है कि उसने हमसे प्रेम किया और वो हमें समझता है। इसे करने का केवल एक ही रास्ता था कि वो हमारे समान यीशु बने।

इसके बाद यूहन्ना कहता है कि, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया की उसने एकलौता पुत्र दे दिया। हम में से कौन किसी से इतना प्यार करता है कि उसके लिए अपना पुत्र दे देता है।

केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है। परमेश्वर चाहता है कि हम यहाँ पृथ्वी पर पूर्ण एवं अर्थपूर्ण जीवन बिताएँ। आइये इस बात को ध्यान में रखते हुए दिल के दौरे पड़े हुओं को कैसे बचाना है, इस बात पर ध्यान करें।

एसप्रीन के साथ ही दूसरे अन्य कई ऐसे ऊपाय है जिनके द्वारा हम दिल के दौरे से बच सकते है। आइये पहले कैसे दवाई से इन्हें ठीक किया जा सकता है। इसके बाद कैसे सर्जरी के द्वारा रोगी का उपचार किया जा सकता है। पहले, दवाई से दवाई से ठीक करने के तरीके है। कई प्रकार की दवाईयाँ है। जिन्हें उन लोगों पर उपयोग में लाया जा सकता है जिन्हें अभी हाल में ही दौरा पड़ा है। कई प्रकार की दवाईयाँ है, इस कार्यक्रम में उनके नामों पर विचार करना कठिन है। परन्तु ये दवाईयाँ जिन्हें दौरा पड़ा है, लिए लाभकारी है।

मैं, मित्रों इस समय में स्टेटिन्स नाम के उपचार पर आपका ध्यान खिचूँगा। यह एक दवाईयों का समूह है, यह 1990 के प्रारम्भ से ही चलन में है। यह कैसे काम करती है? ये काम करती है। पहली बात ये दवाई बहुत ही उपयोगी है, हजारों लोगों ने इस दवा का उपयोग करके इसका फायदा उठाया है, जिसके कारण वे दौरा पड़ने से बच गये। यह दवाईयाँ बहुत की महत्वपूर्ण है यह दवा न केवल दौरा पड़ने से रोकती है बल्कि आगे दौरा पड़ने से भी बचाती है। ये दवा दूसरी दवाईयों की तुलना में 40 प्रतिशत लाभकारी है। दवाईयों की तुलना में जो यह दवा नहीं लेते। यह ऐसा कैसे करते है। वे शरीर के कौलस्ट्रोल को कम करती है। कौलस्ट्रोल हमारे शरीर में रक्त के प्रवाह को रोकता है। अतः इसके द्वारा दिल का दौरा नहीं पड़ता है। यह बात और भी ध्यान देने लायक है कि यह एक सुरक्षित दवा है। विश्वा में कहीं भी इसके द्वारा शरीर पर कोई अतिरिक्त प्रभाव नहीं पड़ता है।

मित्रों, इस समूह की दूसरी दवा है जिसे मधूमेह के लिए प्रयोग किया जाता है। क्योंकि मधूमेह क रोगियों को भी दिल का दौरा पड़ने का खतरा है। इन रोगियों का अपना मधूमेह कम करना चाहिए ताकि पहले दौरे से बचकर, दूसरे दौर की आशंका को खत्म किया जा सकें। इसे अच्छे व्यायाम, खान–पान, एवं लगातार डॉक्टर की देखरेख में दवा खाकर ठीक किया जा सकता है।

मित्रों, अन्तिम ईलाज है सर्जरी। इसके मूल रूप से दो तरीके है। पहला तरीका है, जिसे हार्ट केथ कहा जाता है। इसमें एक तार जाँघ की तरफ से ह्रदय में ले जाते है, यह देखने की ह्रदय की नलियाँ कहा बन्द है। लगभग 40 वर्षों तक संसार भर में यह तरीका अपनाया गया।

चीन में आज भी यह बहुत प्रचलित तरीका है। क्या इस से कुछ ज्यादा खतरा है। हाँ, परन्तु एक योग्य डॉक्टर के हाथ में लोग सुरक्षित है। इस दौरान यदि पाया जाता है कि हृदय की आरटरी बन्द है, तो एक स्टेन्ट या छोटी ट्यूब इस खराब आरटरी में डाल दी जाती है। यह प्रणाली प्रतिदिन विकसित हो रही है। इस तरीके से ही बढ़ते हृदय के दौरों को कम किया जा सकता है।

मित्रों, दूसरा तरीका है, सर्जरी का ; इस तरीके में डॉक्टर आरटरी के बन्द स्थान तक पहुँच इसे ठीक करता है। यह तरीका भी 1960 से प्रयोग में है। यह सर्जरी केवल स्टेण्ट लगाने से लम्बी होती है। परन्तु एक अच्छे डॉक्टर के हाथों में मरीज़ सुरक्षित रहता है। इस तरीके को डॉक्टर पहले की तुलना में क्यों चुनते है। मित्रों, बहुत से रोगियों की एक से ज्यादा आरटरी खराब होती है, ऐसी दशा में केवल स्टेण्ट रखने भर से ही काम नहीं चलेगा। भविष्य सब कुछ बदल सकता है, उदाहरण के तौर पर शायद स्टैण्ट लगवाना ही पसन्द करे और यह लगने लगे।

कुछ हो, मित्रों, चिकित्सा के क्षेत्र में और किसी क्षेत्र में इतना विकास नहीं हुआ जितना हृदय रोग के क्षेत्र में खासकर हृदय की बन्द आरटरी के क्षेत्र में।

आइये फिर से एक बार आज की बातचीत पर ध्यान करे। अगले वर्ष बहुत से लोगों को दिल के दौरे पड़ेंगे हो सकता है कि आपको दौरा पड़ा हो, या पड़ेगा, या किसी ऐसे व्यक्ति को जानते है। मुख्य बात है कि दौरे के बाद रोगी की अच्छी देखभाल हो। यदि नहीं तो रोगी मर जाएगा। बाइबल बताती है कि हमारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है। यीशु चाहता है कि हमारा शरीर स्वस्थ रहे। बाइबल में उसे महान डॉक्टर कहा गया है। उसने कई लोगों को पूर्ण रूप से चंगा किया, परन्तु हम देखते है कि लोगों को दूसरे प्रकार बीमारी भी है। एक है, वो आत्मा जिसमें परमेश्वर के प्रति लगन नहीं है। ये लोग दुःखी रहते हैं। इसके पास इस जीवन या इसके बाद कोई आशा नहीं रहती है। प्रभु यीशु इसे बदलने के लिए पृथ्वी आये। आप कहेंगे कि कैसे, इसका उत्तर है, क्रूस पर हमारे पापों के लिए मरकर। आप भी आज उसी शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

आइये यह प्रार्थना करें, प्रभु मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किया है, और मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरे लिए क्रूस पर मरे, एवं कब्र से जी उठे, एवं मृत्यु पर जय पाई और मैं मानता हूँ कि आप आज जीवित है। प्रभु यीशु के नाम से, आमीन!

यदि आपने यह प्रार्थना की है और यह विश्वास करते है तो आप सनातन सन्तान बन गये है और अनंत जीवन आपका है।

प्रभु आप सबको आशीष दें।